शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

मुस्लिम महिलाओं में आधुनिकीकरण और परिवर्तन (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

प्राप्तिः 15.01.2025
स्वीकृतः 20.02.2025

8

परवीन बॉबी
शोध छात्रा, (समाजशास्त्र)
के0 जी0 के0 (पी0 जी0) कॉलेज, मुरादाबाद।
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड
विश्वविद्यालय बरेली।
ईमेलःpervinboby500@gmail.com

प्रोफेसर ममता रानी
शोध निर्देशिका,
के0 जी0 के0 (पी0 जी0) कॉलेज,
मुरादाबाद।

सारांश

भारतीय समाज में आधुनिकीकरण का प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग, क्षेत्र व जनमानस के सम्पूर्ण जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। आधुनिक परिवर्तन की लहर ने भारत के प्रत्येक धर्म, जाति के पुरुषों, महिलाओं तथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया है। निःसन्देह रूप से आरम्भ से ही महिलाएँ समाज का अभिन्न अंग रही हैं। समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी उन्हें दोयम् दर्जे का स्थान प्राप्त है। आधुनिकीकरण द्वारा समाज में निरन्तर आधुनिक परिवर्तन हो रहे हैं चाहें वे परिवर्तन औधोगिक क्षेत्र, स्वास्थ्य क्षेत्र या शिक्षा, संचार प्रणाली में हो या फिर मानव जीवन व्यवस्था में। यह परिवर्तन सभी क्षेत्रों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न परिवर्तनों ने महिलाओं की सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति व भूमिका में अभूतपूर्व बदलावों को जन्म दिया। इन परिवर्तनों ने मुस्लिम महिलाओं को भी प्रभावित किया वे भी आधुनिक परिवर्तनों से अछूती नहीं रहीं। परन्तु अन्य धर्म की महिलाओं की तुलना में आधुनिकता को अपनाने हेतु मुस्लिम महिलाएँ अधिक संघर्षशील दिखाई देती हैं। उनकी सामाजिक स्थिति अन्य धर्मों की महिलाओं की तुलना में अधिक चिंताजनक है। अधिकतर मुस्लिम महिलाएँ, निम्नशिक्षा स्तर, गरीबी, तलाक, बहुविवाह, दहेज प्रथा तथा संर्कीण मानसिकता, अजागरुकता की कमी आदि से प्रभावित होती हैं। आधुनिकीकरण तथा शिक्षा ने भारतीय समाज की मुस्लिम महिलाओं के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाकर उन्हें अबला से सबला बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुस्लिम महिलाएँ आधुनिक समय में शिक्षा व संचार माध्यमों द्वारा अपने अधिकारों तथा स्वयं व समाज के प्रति अधिक जागरुक हुई हैं। आज वे समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। चाहे वह क्षेत्र अध्यापक, डाक्टर, वैज्ञानिक, पुलिस, मीडिया, बैंकिंग या प्रशासनिक सेवा का हो। परन्तु यह सत्य है कि उच्च शिक्षा के स्तर तक बहुत ही कम मुस्लिम महिलाएँ पहुँच पाती हैं। सम्पूर्ण मुस्लिम महिलाओं की कुल आवादी का बहुत बड़ा हिस्सा आज भी आधुनिक सुविधाओं व शिक्षा से वंचित है।

ग्रामीण व निम्न वर्गीय मुस्लिम महिलाएँ, नगरीय व उच्च वर्ग की महिलाओं से पिछड़ी हुई हैं। आधुनिक सुविधाओं व अवसरों का लाभ कुछ ही प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं को मिल पाता है। वर्तमान समय में इस्लामिक देशों में जैसे सउदी अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान आदि में महिलाओं को भी देश के विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। मुस्लिम देशों में लागू कठोर नियमों में ढील दी जा रही है।

मुख्य बिंदु

आधुनिकीकरण, परिवर्तन, मुस्लिम महिलाएँ, सामाजिक स्थिति, विकास।

प्रस्तावना

समकालीन भारतीय समाज में महिलाओं के स्थान और उनकी भूमिका के सम्बन्ध में प्रचलित परम्परागत मान्यताएं धीरे–धीरे बदलती जा रही हैं। स्वन्त्रता के समय प्रगतिशील व उदारवादी विचारों ने पूरे भारत को प्रभावित किया तथा सभी पुरुषों व महिलाओं को समान रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक अधिकार प्राप्त हुए जिसके फलस्वरूप देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। मुस्लिम महिलाओं को भी समान अधिकारों की प्राप्ति के साथ शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त हुआ। बहुविवाह में भी कुछ कमी आयी परन्तु तलाक के चलन में अत्यधिक वृद्धि हुई। पर्दा प्रथा का चलन जारी रहा। धीरे–धीरे मुस्लिम महिलाओं ने भी जीविका कमाने हेतु घर से बाहर निकलना आरम्भ किया। जिससे उनकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में सुधार आया। अधिकतर मुस्लिम महिलाओं में अशिक्षा, गरीबी तथा स्वयं के प्रति उदासीन होने के कारण उनकी स्थिति दयनीय बनी हुई है। इसका एक बड़ा कारण मुस्लिम समाज द्वारा मुस्लिम महिलाओं पर लगाये गये मनमाने प्रतिबन्ध भी रहे हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् अन्य धर्मों की महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये जिससे उन्होंने सुअवसरों का लाभ उठाकर अपनी स्थिति को मज़बूत बनाया परन्तु मुस्लिम महिलाओं के पिछड़ेपन का बड़ा कारण मुस्लिम समाज की संर्कीण मानसिकता रही है। आध ाुनिकीकरण ने पूरे विश्व व भारतीय समाज के साथ–साथ मुस्लिम समाज के पुरुषों की मानसिकता को भी अत्यधिक रूप से प्रभावित किया। मुस्लिम समाज के पुरुषों ने महिलाओं के अधिकारों और आवश्यकताओं को महत्व देते हुए उन्हें समान रूप से शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की तथा मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति को उच्च बनाने हेतु आज मुस्लिम परिवार बेटियों का भविष्य सवाँरने के लिए चिंतित दिखाई देते हैं। मुस्लिम परिवार बेटियों को उनके लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सहयोग प्रदान कर रहे हैं। परन्तु इस तथ्य से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है कि यह सुविधाएँ व सहयोग कुल मुस्लिम महिला आबादी में से कुछ ही प्रतिशत महिलाओं को प्राप्त होता है।

सच्चर कमेटी की रिर्पोट '2006' के अनुसार

जस्टिस राजिंदर सच्चर की अध्यक्षता में भारत सरकार द्वारा 2006 में मुस्लिम समाज तथा मुस्लिम समाज की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षिक स्थिति के आंकलन हेतु सच्चर कमेटी की रिर्पोट प्रस्तुत की गयी थी। 403 पन्नों की इस रिर्पोट के अनुसार देश में मुस्लिम समाज अन्य धार्मिक समुदायों की अपेक्षा अधिक पिछड़ा हुआ है। मुस्लिम समाज में निरक्षरता व निर्धनता अधिक है। भारतीय समाज में मुस्लिम समाज की स्थिति अनुसूचित जाति व जनजाति से भी निम्न स्तर पर है तथा मुस्लिम महिलाओं की स्थिति तो और भी अधिक दयनीय और चितांजनक है।''

मुस्लिम समाज आज भी मुस्लिम महिलाओं को अधिक आज़ादी देने के पक्ष में नहीं है। मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा अधिकतर इण्टरमीडिएट या स्नातक तक ही सिमट कर रह जाती है। उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की नामांकन संख्या बहुत कम है। एक ओर मुस्लिम महिलाओं से सम्बन्धित मुद्दे जैसे तीन तलाक, बहुपत्नी विवाह, हलाला, हिजाब आदि मामले राजनीतिक चर्चा का विषय बनते रहते हैं। चाहे वे मुद्दे देश में हों या विदेश में। ईरान में हिलाब के नाम पर महसा अमीनी की हत्या कर दी गयी, उसका जुर्म बस इतना था कि उसने हिजाब सही से नहीं पहना था। मुस्लिम महिलाओं के लिए घर के अन्दर रहने, अपनी परम्पराओं का पालन करने तथा पर्दा प्रथा को ही अच्छा समझा जाता है। जिसका समर्थन मुस्लिम समाज के धर्मगुरूओं व पुरुषों द्वारा पुरज़ोर तरीके से किया जाता है। दूसरी ओर आधुनिकीकरण के प्रभाव से मुस्लिम समाज के उदारवादी और शिक्षित पुरुष महिलाओं को वे सभी समान अधिकार देने के पक्षधर है जो इस्लाम धर्म तथा भारतीय संविधार द्वारा महिलाओं को प्रदान किये गए हैं। आज आधुनिक महिलाएँ पुरुषों के पीछे ना खड़ी रहकर समानान्तर आ खड़ी हुई हैं। आज समाज में सभी धर्मों की महिलाएँ आत्मनिर्भर बनने के लिए तत्पर दिखाई देती हैं। वे भी अपने परिवार व समाज के उत्थान में अपना सहयोग व योगदान देना चाहती हैं।

शोध उद्देश्य

- भारतीय मुस्लिम महिलाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
- आधुनिकीकरण का मुस्लिम महिलाओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

शोध अध्ययन में पूर्ण रूप से वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु द्वितीयक डाटा संग्रह का प्रयोग किया गया है जिसके अर्न्तगत विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेख, शोध, रिपोर्ट तथा समाचार पत्रों, इन्टरनेट बेबसाइटों का अवलोकन किया गया है।

1. भारतीय मुस्लिम महिलाओं की वर्तमान स्थिति

मुस्लिम महिलाएँ इस्लाम धर्म की अनुयायी होती हैं। अतः इस्लाम के बारे में ज्ञात होना आवश्यक है। इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव अरब देश में हुआ तथा अरब देश से ही मुस्लिम धर्म का पूरे विश्व में प्रचार व प्रसार हुआ। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद साहब हैं। इस्लाम धर्म के मानने वाले लोग ही मुसलमान कहलाते हैं और इस्लाम धर्म का शाब्दिक अर्थ शांति है। अरब देश में इस्लाम धर्म के प्रारम्भ होने से पहले वहाँ की महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। उनके साथ पशुओं के समान व्यवहार किया जाता था। अधिकतर लोग बालिका के जन्म के समय ही जीवित अवस्था में मिट्टी में दबा देते थे या पहाड़ी से फेंक देते थे। जिस प्रकार बाज़ार में वस्तुओं को खरीदा–बेचा जाता है उसी प्रकार महिलाओं का भी क्रय–विक्रय किया जाता था। उन्हें गुलाम बना कर उन पर घोर अत्याचार किये जाते थे। परन्तु अरब देश में इस्लाम धर्म का उदय होने से महिलाओं की किस्मत का सितारा चमक उठा। हज़रत मुहम्मद साहब ने महिलाओं को समाज में सम्मान जनक स्थिति दिलाने तथा उनके अधिकारों की प्राप्ति हेतु भरसक प्रयत्न किये जो उन्हें इस्लाम धर्म द्वारा दिये गये हैं। महिलाओं के जीवन को सुधारने के लिए हज़रत मुहम्मद साहब ने आजीवन संघर्ष किया तथा शिक्षा को प्राप्त करना अति आवश्यक कार्य बताया। जो पुरूष और महिला दोनों के लिए फर्ज है। शिक्षा के माध्यम से ही लोगों में जागरूकता

उत्पन्न होती है। शिक्षा द्वारा ही मानव अपने तथा समाज की भलाई के लिए चिन्तन करता है। फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आने लगे जो आधुनिक दौर में भी निरन्तर जारी हैं। जिसका लाभ सभी धर्मो की महिलाओं को मिल रहा है। आधुनिकीकरण के दौर में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति पूर्व की तुलना में अधिक बेहतर हुई है। परन्तु आज भी मुस्लिम महिलाएँ स्वयं की सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्थिति को ऊँचा उठाने के लिए प्रयासरत है क्योंकि उन्हें वर्तमान समय में भी सुअवसरों व साधनों की उपलब्धता कठिनता के साथ प्राप्त होती है। आज भी मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में सैद्धान्तिक और व्यवहारिक रूप से बड़ा अन्तर देखने को मिलता है।

आधुनिक भारतीय समाज में महिलाओं के परिवर्तन में शिक्षा एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। उसी प्रकार इस्लाम धर्म में भी ''तलबुल इल्म फरीजतुन अलाकुल्ली अलमुस्लिम व मुस्लिमा'' इस आयत के माध्यम से हज़रत मोहम्मद साहब ने बताया की तालीम (शिक्षा) हर मर्द और औरत के लिए अति आवश्यक है। उसी प्रकार भारतीय संविधान द्वारा शिक्षा का समान अधिकार सभी को प्राप्त है। इस्लाम धर्म स्त्री व पुरुष सभी को समान अधिकार प्रदान करता है। ईश्वर के समीप वही बेहतर है जिसने पुण्य कार्य किये हैं चाहें वह स्त्री हो या पुरूष। परन्तु आधुनिकीकरण ने मुस्लिम समाज की मानसिकता पर गहरा व साकारात्मक प्रभाव डाला जिससे महिलाओं के प्रति उनके दर्षष्टिकोण में परिवर्तन आया। अब मुस्लिम धर्मगुरू व अन्य पुरुष भी शिक्षा के महत्व को समझ चुके हैं जिस कारण वे भी मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के प्रति वकालत करते देखे जा सकते हैं। मुस्लिम महिलाएँ भी समाज में व परिवार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तथा परिवार के आर्थिक बोझ को कम करने में अपना सहयोग प्रदान करना चाहती है। मुस्लिम महिलाएँ अपनी धार्मिक सांस्कृतिक परम्पराओं का पालन करते हुए समाज में, परिवार में अपनी भूमिका निभाना चाहती है। आज कुछ मुस्लिम महिलाएँ पर्दे का पालन करते हुए भी नौकरी कर रही हैं। पर्दे को बाधा के रूप में न देखकर वे इसका उपयोग अपनी सुविधानुसार करती हैं। स्कार्फ का प्रयोग मुस्लिम महिलाओं के अलावा अन्य धर्मों की महिलाएँ भी कर रही हैं।

जीनत शौकत ने अपनी पुस्तक **''दा इम्पॉवरमेंट ऑफ वुमैन इन इस्लाम''** में कहती हैं कि आज मुस्लिम महिलाएँ इस्लाम धर्म की परम्पराओं को निभाने के साथ–साथ शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ने का प्रयास कर रही हैं। उनका कहना है कि सम्पूर्ण विश्व में इस्लाम धर्म ही एक मात्र ऐसा धर्म है जिसने महिलाओं को सम्पत्ति तथा तलाक (खुला) लेने का अधिकार प्रदान किया है।

असगर अली इंजी0 ने अपनी पुस्तक **''परम्परा और आधुनिकीकरण के बीच मुस्लिम महिलाएँ''** में कहा है कि भारतीय मुस्लिम महिलाएँ अपने अधिकारों और भूमिका के प्रति अजागरूक व उदासीन रहती हैं। जबकि दूसरी ओर पश्चिमी एशियाई महिलाएँ आधुनिकता को महत्व देती हैं। मुस्लिम महिलाएँ अपनी संस्कृति व धार्मिक कृत्यों को निभाते हुए आधुनिकता का लाभ प्राप्त करना चाहती हैं। उनके अनुसार मुस्लिम महिलाओं की परम्परा और आधुनिकता में द्वन्द की स्थिति को समाप्त करने के लिए मुस्लिम धर्मगुरूओं को प्रयास करना चाहिए।

जोया हसन का मानना है कि ''भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक व सामाजिक पिछड़ेपन का कारण धार्मिक नहीं बल्कि आर्थिक है। मुस्लिम समाज आज भी अपनी आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को ही बड़ी बाधाओं के साथ पूरा कर पाता है।'' आधुनिक समय में परिवर्तन की लहर से मुस्लिम समाज के लोगों के विचारों में भी

परिवर्तन उत्पन्न हुए जिससे वे अधिक मानसिक संर्कीणता के गुलाम नहीं रहे। आधुनिकीकरण ने रोजगार के नये अवसर प्रदान कर गरीबी कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन सब का लाभ मुस्लिम महिलाओं को भी हुआ। मुस्लिम समाज में उदारवादी विचारधारा रखने वाले लोगों ने महिलाओं को नौकरी करने की अनुमति दी है तथा शिक्षा के प्रति मुस्लिम महिलाएँ अधिक सजग हो रही हैं। वे भी अब अपने अधिकारों की मांग करने लगी हैं। वे जान चुकी है कि शिक्षा ही उनकी दशा बदलने का मज़बूत साधन है। उच्चशिक्षित व उच्चवर्गीय मुस्लिम महिलाओं में अब पर्दे का चलन घटता जा रहा है। बहुपत्नी विवाह में भी कमी आ रही है। ग्रामीण महिलाओं के परिवर्तन में जनसंचार माध्यम एक सशक्त माध्यम बन कर उभर रहा है।

2. आधुनिकीकरण का मुस्लिम महिलाओं पर प्रभाव

वर्तमान समय में आधुनिक भारतीय समाज में नित नये परिवर्तन हो रहे हैं चाहे वे परिवर्तन जनसंचार माध्यम से हो या विज्ञान तकनीकी द्वारा या फिर भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा चलायी गई नई–नई योजनाओं के माध्यम से हो या विशेष अधिनियमों द्वारा। मुस्लिम महिलाएँ भी अब पर्दे की ओट से बाहर निकलकर मुस्लिम समाज के बन्धनों के बाद भी समाज में अपना स्थान बनाने का भरसक प्रयत्न कर रही हैं। परन्तु सफल या प्रयत्नशील महिलाओं का प्रतिशत कुल महिला आवादी में बहुत कम है। ऐसी मुस्लिम महिलाओं की संख्या अधिक है जो आज भी आधुनिक दौर में अपनी पहचान तथा आर्थिक व सामाजिक स्थिति मज़बूत बनाने का सपना संजोय हुए हैं। आधुनिकीकरण के बाद भी तलाक, बहुविवाह, पर्दाप्रथा, संर्कीण मानसिकता, अशिक्षा जैसी समस्यायें मुस्लिम महिलाओं के समक्ष खड़ी हैं। इन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता है। यह समस्यायें ही मुस्लिम महिलाओं के विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। परन्तु सरकार के प्रयत्न द्वारा तीन तलाक पर रोक लग चुकी है फिर भी आये दिन तलाक के मामले सामने आते रहते हैं। परन्तु वास्तविक रूप से आधुनिकीकरण ने सम्पूर्ण विश्व की महिलाओं की जीवनशैली व स्थिति में परिवर्तन की लहर उत्पन्न कर दी है। इससे मुस्लिम महिलाएँ भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकीं। मुस्लिम महिलाओं ने भी आधुनिक साधनों का उपयोग कर अपना भविष्य सवाँरने का भरपूर प्रयत्न किया है। जिसके फलस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति व भूमिका में परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। आज भारतीय मुस्लिम महिलाएँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का परचम लहराने में सफल हो रही हैं। मुस्लिम महिलाएँ शैक्षिक क्षेत्र में, स्वास्थ्य क्षेत्र में, न्याय, व प्रशासनिक क्षेत्र या रिसर्च क्षेत्र में, बैंकिंग में इंजी0 क्षेत्र में, परिवार में, सामाजिक कायक्रमों में, समाज सेवा में, मीड़िया के क्षेत्र में आदि स्थानों पर अपनी साकारात्मक भूमिका स्थापित करने में सफल हो रही हैं। राज्य सरकार द्वारा संचालित कौशल विकास योजना, कन्या सुमंगला योजना, विवाह अनुदान योजना, छात्रवृत्ति योजना, अभ्युदान योजना आदि द्वारा प्रत्येक वर्ग व धर्म की महिलाओं के साथ–साथ मुस्लिम महिलाएँ भी लाभान्वित हो रही हैं। जिससे महिलाओं को स्थिति में निरन्तर विकास हो रहा है।

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि मुस्लिम महिलाओं में बदलावों की ब्यार तो अवश्य चल रही है परन्तु इसकी गति बहुत धीमी है। आधुनिक परिवर्तन की लहर ने कुछ ही प्रतिशत महिलाओं को अधिक प्रभावित किया है। अधिकतर मुस्लिम महिलाएँ आज भी विभिन्न समस्याओं से

घिरी हुई हैं। मुस्लिम महिलाओं की कुल आवादी के समुचित विकास के लिए अधिक से अधिक संसाधनों व अवसरों की आवश्यकता है। जिससे वे स्वयं व समाज का भला कर सकें। मुस्लिम महिलाओं के केवल महिला के रूप में ही परिभाषित किया जाये न कि किसी धर्म विशेष से जोड़ कर देखा जाना चाहिए। तो ही इनका कल्याण सम्भव है। धर्मवाद व राजनीतिवाद आदि से ऊपर उठकर मुस्लिम महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्न करने होंगे। तब ही वे देश के विकास की मुख्य धारा से जुड़ पायेंगी। मुस्लिम महिलाओं की स्थिति तब और दयनीय हो जाती जब समाज में उसे साम्प्रदायिक तथा मुस्लिम समाज में उसे उपेक्षा की नज़रों से देखा जाता है। वास्तव में आधुनिकीकरण ने भेदभाव, असमानता को समाज से प्रभावी ढंग से कम किया है। आधुनिक काल में मुस्लिम महिलाओं में परिवर्तन तो अवश्य हुए हैं परन्तु उपेक्षित मुस्लिम महिलाओं की संख्या आज भी अधिक है। ग्रामीण व निम्न वर्गीय महिलाएँ आज भी वंचित वर्ग की श्रेणी में खड़ी हैं।

सन्दर्भ

1. अलताना, मरियम (2000) ''मुस्लिम बुमैन एण्ड इस्लामिक ट्रेजिशन स्टडीज़ इन मॉडरनाई जेशन'' कनिष्का पबिल्सर्स 4697/5–21A, नई दिल्ली।
2. ए0जे0 नूरानी (2003) ''दा मुस्लिम ऑफ इण्डिया–ए डाक्यूमेंट्री रिकार्ड'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
3. हसन, जोया व मेमन रितु (2004) ''असमान नागरिक भारत में मुस्लिम महिलाएँ'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।
4. सिंह, योगेन्द्र (2005) ''भारतीय परम्परा और आधुनिकीकरण'' रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. सच्चर, रजिंदर जस्टिस (2006) ''रजिंदर सच्चर कमेटी रिर्पोट 2006'' भारत सरकार द्वारा।
6. अय्यूब, मोहम्मद (2008) ''मुस्लिम महिलाएँ और सामाजिक परिर्वतन रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली।
7. अली, असगर इंजी0 (2012) ''परम्परा और आधुनिकीकरण के बीच मुस्लिम महिलाएँ'' अजन्ता पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. शौकत अली, जीनत (2014) ''दा इम्पॉवरमेंट ऑफ बुमैन इन इस्लाम'' विकास पब्लिसर्स सिमोन्स लि0।
9. https://academic.oup.com
10. https://sites.bu.edu
11. https://www.cambridge.org
12. https://www.ox.ac.uk